भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-17 अंक-11 | वि. स. 2078 | युगाब्द 5123 | जनवरी-2022 | डिजिटल संस्करण

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/-

मार्गदर्शक :

- डॉ. कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेवशर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :

- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :

- राजेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :

- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :

- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :

भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निराला नगर,
लखनऊ, उ.प्र.-226020
दूरभाष: 0522-4001837,
0522-2789406
मो: 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :

E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
मो : 9811068375

आलोक: प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक सहयोग राशि : रु 5000/-

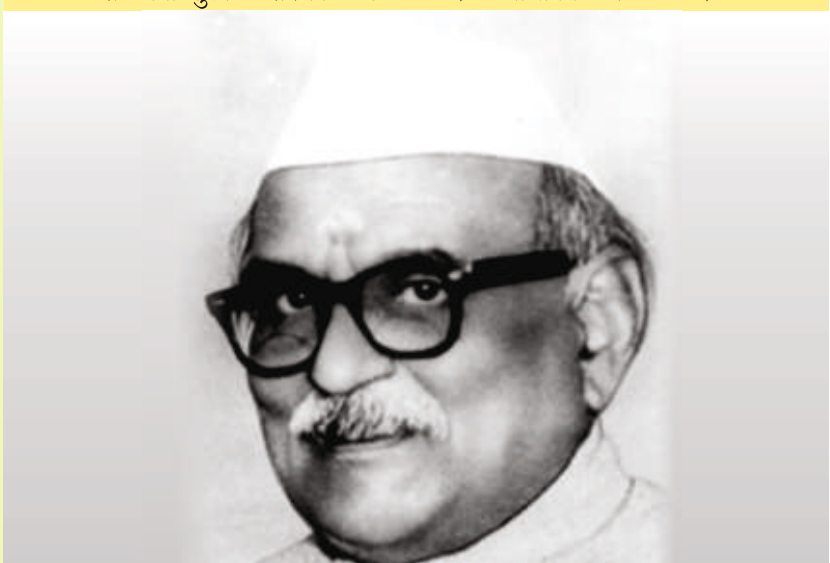

जन्म - 01 जनवरी 1890 निधन - 10 जनवरी 1969

डॉक्टर संपूर्णानन्द

शिक्षाविद् लेखक कवि, संपादक मतिमान।
राष्ट्रभक्त नेता प्रखर, प्रगतिशील गतिमान।।
शिक्षक साधक धर्मप्रिय, वाणी ललित ललाम।
श्री संपूर्णानन्द को, आदर सहित प्रणाम।।

सेवा संवाद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य

आपकी पत्रिका सेवा संवाद अब डिजिटल रूप में प्रकाशित करने का निर्णय न्यास द्वारा किया गया है। आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें।

पाठकों की कलम से - इस कॉलम के लिए पत्रिका के विषय में या भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों से सम्बंधित आपके अनुभव व सुझाव आमंत्रित हैं। अपना नाम, पता और मोबाइल भी जरूर दें।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 26 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. सचल चिकित्सा सेवा - रु. 11,000 की मासिक धनराशि का सहयोग करके एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. नेत्र चिकित्सा सेवा - रु. 5000 की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. विकलांग सहायता सेवा - रु. 1,000 से 6,000 तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)- रु. 10,000 से अधिक की धनराशि का अर्पण करके न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. छात्रवृत्ति- न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है - प्राथमिक : रु 3000, माध्यमिक (जू.हा.) : रु 5,000, हाईस्कूल : रु 7,000, इण्टरमीडिएट : रु 8000, आई.टी.आई/डिप्लोमा एवं स्नातक : रु 10,000, परास्नातक : रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु : रु 15,000, इंजीनियरिंग : रु 18,000 और मेडिकल : रु 20,000।
6. सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका) - रु. 1,200 की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. सेवा संवाद (मासिक) - रू. 2,000 की आजीवन एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. माधव सेवा आश्रम - रु. 5,00,000 का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. विश्राम सदन दिल्ली - दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. देवभूमि ऋषिकेश में प्रस्तावित **माधव सेवा विश्राम सदन** के भवन निर्माण हेतू अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है।
11. अक्षय सेवा - दिल्ली में एम्स एवं दो अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 6,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
12. CSR फंड - यदि आपकी फर्म CSR में भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं :

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो, **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेजें।
- अप्रवासी भारतीय भी FCRA के अन्तर्गत दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं., फोन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 6806100009948 (IFSC : BKID0006806)
  - भारतीय स्टेट बैंक, डालीगंज, लखनऊ - खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - बैंक ऑफ इण्डिया, पटपड़गंज, नई दिल्ली - खाता सं. 605810110013350 (IFSC : BKID0006058)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति का 75 वाँ वर्ष, वर्ष पर्यन्त चलने वाले अमृत महोत्सव के रूप में सम्पूर्ण देश में आयोजित हो रहा है। आबालवृद्ध सभी इस आयोजन से उत्साहित और आनन्दित हैं। अतीत की स्मृति, स्वातंत्र्य यज्ञ में आहुति देने वालों का सम्मान, युवा पीढ़ी को राष्ट्र भक्ति की प्रेरणा मिले एवं राष्ट्र गौरव की अनुभूति हो, सभी अपने अपने स्तर पर राष्ट्रहित, रक्षा और गौरव के लिए अनेकानेक शुभ संकल्पों के साथ तैयार हों- यही तो अमृत महोत्सव का प्रतिफल होगा।

कल बीत गया। आज के दिन बीता हुआ कल लौटकर आने वाला नहीं है। इसलिए आज के दिन अगर आप कल पर दुःख या चिन्ता करते हैं तो व्यर्थ है। इस संसार में आप के साथ सहानुभूति दिखाने वाला कोई नहीं है, यदि कल को आपने यों ही खो दिया है तो उसका प्रतिफल आपको भोगना ही पड़ेगा और अगर कुछ अच्छा करके आपने सदुपयोग किया है तो उसका लाभ भी अवश्य ही मिलेगा। कल तो बीत ही गया। वर्तमान आज हमारे हाथ में है, इसको अच्छा बनाना, इसका अच्छा उपयोग करना हम पर निर्भर करता है। हाँ, एक बात अवश्य है कि कल के अनुभवों का लाभ आज हम ले सकते हैं, क्योंकि जो आज है वर्तमान है वह शीघ्र ही कल में परिणत होने वाला है।अस्तुआज के सन्दर्भ में कुछ बातें ध्यान में आ रही हैं उनका उल्लेख करना हमें उपयोगी लगता है। सर्वप्रथम तो हम जहाँ हैं जिस भी हाल में हैं खुश रहने की कोशिश करें क्योंकि सुख-दुःख अपने अनुभव की बात है। सकारात्मक सोच के साथ परिस्थितियों में सामंजस्य बिठाना अच्छा रहता है। सुख-दुःख किसी वस्तु में निहित नहीं रहता है। इसलिए अगर कुछ नहीं मिला तो गम नहीं, और मिला है तो इतराना नहीं। ध्यान रहे वस्तु - परिस्थिति सभी परिवर्तनशील हैं। जो कुछ हमें प्राप्त है उसके लिए परमात्मा का धन्यवाद करें और फिर उसका उपयोग करें। यह विचार हम अवश्य करें कि जल, वायु, आकाश, सूर्य की ऊर्जा आदि सब प्रकृति ने हमें बिना किसी मूल्य के दे रखा है तो हमारे पास जो है, क्या हम उसमें से कुछ अंश अपने भाई बन्धु, पास-पड़ोस के लोगों अथवा राष्ट्र के लिए बिना किसी स्वार्थ के दे रहे हैं? यदि नहीं ! तो क्या आज और अभी से देना प्रारम्भ कर सकते हैं? क्या हम कुछ ऐसा कर सकते हैं कि लोगों में देने का संस्कार बने?

बाल्यकाल में हमने किसी से सुना था कि हम किसी को वही देते हैं जो हमें दूसरों से मिला होता है। हमने इस तथ्य की सत्यता को प्रमाणित होते हुए देखा है। किसी भी अपराधी, उदण्ड, कठोर, निर्दयी और उदार व्यक्ति के जीवन का अध्ययन करने पर तथ्य स्वतः प्रमाणित हो जायेगा। तो फिर क्यों न हम दूसरों को प्यार, आदर और मान देना प्रारम्भ करें। क्यों न हमसे ही कुछ अच्छाई की शुरुआत हो? यह विचार करें कि क्या हममें हमेशा रोते रहने, शिकायत करते रहने की आदत तो नहीं है क्योंकि परमात्मा को भी हमेशा याचना करने वाले, रोते रहने अथवा शिकायत करने वाले बच्चे अच्छे नहीं लगते। शायद हम भी ऐसे बच्चों को पसंद नहीं करते। अस्तु धैर्य व सन्तोष धारण करने का अभ्यास बनाना ही अच्छा रहता है। वर्ष 2021 कुछ इसी तरह अपने खट्टे-मीठे मधुर स्मृतियों के साथ अतीत के गर्भ में समाहित हो हमसे विदा हो गया है और 2022 एक नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ने के लिए मानो हमें प्रेरित कर रहा है। हम शुभ संकल्पों के साथ आगे बढ़ें, चतुर्दिक विकास और उन्नति करें। इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ यह अंक आपको समर्पित है।

-शिव

समर्थ भारत

दीक्षांत समारोह (प्रमाणपत्र वितरण समारोह)

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के एक प्रकल्प 'समर्थ भारत' द्वारा दिए जा रहे प्रशिक्षण में ब्यूटीशियन कोर्स के प्रथम बैच का दीक्षांत समारोह (प्रमाणपत्र वितरण समारोह) दिनांक 8 दिसम्बर 2021, बुधवार, दोपहर 12 बजे केवीआईसी, वेलोड्रोमे मार्ग, गेट नंबर 4, गांधी स्मृति, राजघाट, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हमारे 5 प्रशिक्षण केन्द्रों मालवीयनगर, कोंडली मयूर विहार फेस-3, ब्रह्मपुरी, रघुबीरनगर और उत्तमनगर की 120 बहनों को ब्यूटीशियन कोर्स का खादी विकास एवं ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) के द्वारा प्रमाणपत्र दिया गया।

मंच पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि, मुख्य अतिथि एवं वक्ता

प्रमाणपत्र प्राप्त करते शिक्षार्थी

कार्यक्रम में सर्वप्रथम KVIC की प्रिंसिपल श्रीमती सरिता दुहान जी ने इस पूरे कार्यक्रम की रूप रेखा सभी के सामने प्रस्तुत की। मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दिल्ली प्रान्त के प्रांत कार्यवाह श्रीमान भारत भूषण जी का मार्गदर्शन सभी बच्चों को मिला। उन्होंने अपने उद्बोधन में बच्चों से आग्रह किया कि उन्हें नौकरी नहीं करनी है बल्कि खुद नौकरी देने वाला बनना है। कार्यक्रम में सेवा भारती- दिल्ली के अध्यक्ष माननीय रमेश अग्रवाल जी का सान्निध्य भी मिला। उन्होंने अपने जीवन के बहुत से अनुभव साझा किये और एक बात मुख्य रूप से कही - "आपको बढ़ना नहीं है बल्कि चढ़ना है। आपने नौकरी नहीं करनी है बल्कि अपना व्यवसाय शुरू करना है और नौकरी देने वाला बनना है।"

मुख्य अतिथि के रूप में खादी विकास एवं ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) के चेयरमैन श्रीमान विनय कुमार सक्सेना जी ने अपना मार्गदर्शन दिया। उन्होंने समर्थ भारत के इस प्रयास को सराहा और आगे भी इसी तरह से लगातार सहयोग करने का आश्वासन दिया। विशिष्ट अतिथि के रूप में KVIC के डिप्टी सी.ओ. श्रीमान एस.एन. शुक्ला जी भी उपस्थित रहे।

दीक्षांत समारोह में उपस्थित विद्यार्थी व शिक्षक

मंच का संचालन KVIC के वाइस प्रिंसिपल श्रीमान विक्रम जी ने किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में इन्होंने सभी बच्चों को PMEGP स्कीम की जानकारी दी और उनके प्रश्नों का समाधान भी किया। कार्यक्रम में कुछ बच्चों ने अपने अनुभव भी साझा किये।

अक्षय सेवा प्रकल्प - दिल्ली

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित अक्षय सेवा प्रकल्प के माध्यम से दिल्ली में तीन प्रमुख अस्पतालों - एम्स, सफदरजंग व आर.एम.एल. के निकट गरीब लोगों को दोपहर का भोजन वितरित किया जा रहा है। पिछले साढ़े चार वर्षों से अधिक समय से अनवरत चलने वाली इस व्यवस्था द्वारा 40 लाख से भी अधिक लोगों को भोजन खिलाया जा चुका है। अपने घर में होने वाले मंगल प्रसंगों पर श्रद्धालु लोग परिवार सहित आकर अपना वह शुभ दिन समाज के गरीब वर्ग के साथ मनाकर अपने को धन्य समझते हैं। उनका यह प्रयास अगली पीढ़ी को एक दिशा देने के साथ साथ वंचित लोगों का भला भी करता है। समय समय पर इसमें भोजन वितरण के लिए समाज के वरिष्ठ महानुभावों का भी सानिध्य एवं आशीर्वाद मिलता रहता है। 10 दिसम्बर को प्रसिद्ध CA श्री विनोद किला जी ने भोजन वितरण में भाग लिया। 24 दिसम्बर को स्वर्गीय देवेंद्र सैनी, नर्सिंग अधिकारी सफदरजंग अस्पताल, को समर्पित लंगर का आयोजन अक्षय सेवा द्वारा किया गया। 26 दिसम्बर को यहाँ मेदान्ता अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक व सुप्रसिद्ध सर्जन डॉ प्रवीण चन्द्र जी का आगमन हुआ। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी डॉ नमिता चंद्रा जी भी थीं जो बत्रा अस्पताल में गायनी (Gynae) की हेड हैं। साथ में न्यास के कोषाध्यक्ष व इस प्रकल्प के संयोजक श्री रामअवतार किला जी अपनी पत्नी श्रीमती सुशीला जी और अपने पुत्रों के साथ उपस्थित थे। सभी ने अपने हाथों से भोजन वितरण का पुण्य कमाया।

भोजन वितरित करते हुए सुप्रसिद्ध डॉ. प्रवीन चंद्रा, उनकी धर्मपत्नी डॉ. नमिता चंद्रा और संयोजक श्री रामअवतार किला

सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री संतोष मित्तल जी और अक्षय सेवा प्रकल्प के श्री आशीष किला जी भोजन वितरण करते हुए

31 दिसम्बर को हुए भोजन वितरण में श्री आशीष किला जी के साथ CSA ग्रुप के चेयरमैन और सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री संतोष मित्तल जी उपस्थित रहे।अपनी माता जी की स्मृति में उन्होंने अपने हाथों से भोजन वितरण के कार्य में सहयोग किया।

इन महानुभावों का सानिध्य न्यास को और विशेष रूप से अक्षय सेवा प्रकल्प से जुड़े कार्यकर्ताओं को बहुत प्रेरित करता है और सभी में नई ऊर्जा का संचार करता है।

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

विश्व में व्याप्त कोविड-19 महामारी के दुष्प्रभावों के बीच स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प वर्तमान में स्वास्थ्य सेवा के कार्यों को पुनः 1 जुलाई 2021 से निरंतरता में जारी रखे हुए है। इस समय ग्रामीण एवं मलिन सेवा बस्तियों के स्वास्थ्य परीक्षण केन्द्रों में से तीन स्वास्थ्य केन्द्रों का संचालन प्रत्येक मंगलवार, गुरुवार व शनिवार को प्रातः 10 से 12 बजे तक क्रमशः बिन्दौआ मोहनलालगंज, 51 शक्तिपीठ बक्शी का तालाब तथा अम्बेदकरनगर मलिन बस्ती में किया जा रहा है। इसी प्रकार अपरान्ह 3 से सायं 5 बजे तक माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केन्द्र का संचालन प्रत्येक कार्यदिवस (रविवार अवकाश) में किया जा रहा है। यहां पर एलोपैथ एवं होम्योपैथ दोनों विधाओं से रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण कर निःशुल्क औषधि प्रदान की जा रही है। अप्रैल 2021 से दिसम्बर 2021 तक सभी स्वास्थ्य केन्द्रों पर 7377 रोगी लाभान्वित हो चुके हैं।

माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केन्द्र पर पंजीकरण कराते रोगी।

माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केन्द्र पर स्वास्थ्य परीक्षण करते डॉ० यू. बी. प्रकाश

रोगी का स्वास्थ्य परीक्षण करते डॉ० वी. के. मिश्र

अम्बेदकरनगर मलिन सेवा बस्ती में स्वास्थ्य परीक्षण करते डॉ० ओ. पी. सिंह

देवड़े नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ

टीम देवड़े नेत्रालय के विनम्र प्रयास से मोतियाबिंद के 13 आपरेशन के बाद सेवा का अवसर देने वाले मरीज़ों को फल देकर विदा करते हुए संचालन समिति के संयोजक प्रो डा. सत्यनारायण शंखवार, कोषाध्यक्ष श्री अमित अग्रवाल जी व अन्य।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित देवड़े नेत्र चिकित्सालय,लखनऊ पूर्व में नेत्र कुम्भ चिकित्सालय के नाम से संचालित किया जाता था। यहाँ आर्थिक रूप से कमजोर नेत्र रोगियों का उपचार विभिन्न अत्याधुनिक उपकरणों और अनुभवी चिकित्सकों द्वारा किया जाता है। कुछ समय पहले तक मोतियाबिंद के रोगियों को ऑपरेशन के लिए विभिन्न अस्पतालों में भेजा जाता था। अब अपने संस्थान ने इस ऑपरेशन के लिए आवश्यक अत्याधुनिक मशीनों की व्यवस्था की है और ऑपरेशन कक्ष भी विकसित किया है जिसमें फेको (PHACO) विधि द्वारा मोतियाबिंद के आपरेशन न्यूनतम शुल्क पर किए जाते हैं।

नेत्र चिकित्सक द्वारा उपचार की प्रक्रिया

अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रकल्प द्वारा लखनऊ के आस पास के स्थानों पर नेत्र शिविर लगाने की योजना बनी है जिसमें रोगियों का उपचार, ऐनक वितरण और मोतियाबिंद का ऑपरेशन किया जाता है। धीरे धीरे इन शिविरों की संख्या और बढ़ाने का प्रयास रहेगा।

दिसंबर मास में ग्राम बिन्दौवा में यह आयोजन हुआ। यहाँ 85 रोगियों का उपचार किया गया, 9 लोगों को ऐनक वितरित किये गए और 7 का मोतियाबिंद का सफल ऑपरेशन किया गया।

मित्रों नमस्कार

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित देवड़े नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ द्वारा गरीब, वंचितों के निमित्त अंधता निवारण हेतु एक छोटा प्रयास शुरू किया है जिसमें फेको विधि (PHACO) द्वारा मोतियाबिंद के आपरेशन न्यूनतम शुल्क पर किए जाते हैं सभी कार्यकर्ता बन्धुओं से निवेदन है कि अपने आस-पास ऐसे लोगों की सहायता करके नेत्रालय टीम का उत्साहवर्धन करें।

सादर प्रणाम

सम्पर्क-7081241700,
9793120738

नेत्र शिविर में रोगियों का पंजीकरण

पं. प्रतापनाराय मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान - 2021-22

साहित्य एवं साहित्यकार का सम्मान राष्ट्रीय दायित्व

प्रो. संगीता श्रीवास्तव द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

किसी राष्ट्र के नागरिक और वहाँ का समाज यदि साहित्य और अपने साहित्यकार का सम्मान नहीं करता तो वह देश अपनी परम्परा को लम्बे समय तक जीवित रख पाता। ये साहित्य और साहित्यकार ही हमारी परम्परा को यशस्वी बनाते हैं। अतः इसका सम्मान हमारा कर्तव्य है। भाऊराव देवरस सेवा न्यास युवा साहित्यकारों को सम्मानित कर उसी राष्ट्रीय जिम्मेदारी को निभा रहा है। उक्त बातें लखनऊ स्थित माधव सभागार सरस्वती कुंज, निराला नगर में भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा आयोजित पं. प्रतापनारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान कार्यक्रम में आए आगन्तुकों को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने कही। प्रो. संगीता श्रीवास्तव जी ने कहा कि कभी–कभी जो कार्य बड़े वीर नहीं कर पाते उस कार्य को लेखक अपनी निर्भीक लेखनी से कर जाते हैं। यही कारण है कि लोकमंगल के लिए कार्य करने वाले ऐसे लेखक अमर हो जाते हैं। पं. प्रतापनारायण मिश्र भी ऐसे ही कालजयी रचनाकार थे, जिन्होंने **'क्या कहती है सरयू धारा'** नामक पुस्तक लिखकर अनमोल कार्य किया।

सम्मान समारोह कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आई.सी.एच.आर. (भारतीय इतिहास एवं अनुसंधान परिषद् दिल्ली) के सदस्य सचिव प्रो. कुमार रत्नम् ने कहा कि आज के साहित्यकार की जिम्मेदारी और बढ़ गयी है क्योंकि देश इस समय आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। इस अमृत महोत्सव को मनाने के पीछे एक उद्देश्य यह भी है कि हम इतिहास के पन्नों को पुनः पलटें और उनमें जो स्वर्णिम इतिहास अभी हमारे सामने आने से छूट गया है, उसे जन सामान्य के सामने लायें। इसी कार्य में लेखकों की भूमिका अग्रणी है। विशेषकर वे लेखक जो पूर्वाग्रह को त्यागकर यथार्थ इतिहास की दृष्टि से साहित्य लिखते हैं। अमृत पीने के इस अवसर पर उन गुमनाम शहीदों को भी अपने चिन्तन का विषय बनाकर यथार्थ साहित्य लिखा जाना चाहिए। दूसरों को इससे प्रेरणा मिलेगी और अपने भारत का बोध हो सकेगा। प्रो. रत्नम् ने कहा, ''आज का युवा साहित्यकार सम्मान ऐसा ही कार्यक्रम है जिसमें नवोदित रचनाधर्मिता को सम्मानित किया गया है। मैं यह आशा करता हूँ कि आज सम्मान पाने वाले इस दिशा में और भी बढ़चढ़कर अपना रचना संसार बनायेंगे। भाऊराव जी ने समाज के सभी वर्गों के लिए कार्य कर सभी को स्पर्श कर सेवा कार्य प्रारम्भ किया जो प्रशंसनीय है। पं. प्रताप नारायण जी ने अपने लेखन से प्रेरणा दी। साहित्य के क्षेत्र में युवाओं को जोड़ने के लिए इस प्रकार के सम्मान के कार्यक्रमों का आयोजन होना बहुत अच्छी बात है।''

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. कुमार रत्नम् का सम्मान। साथ में हैं प्रो. संगीता तिवारी, श्री जितेन्द्र अग्रवाल और श्री रंजीव तिवारी

मुख्य अतिथि प्रो. संगीता श्रीवास्तव द्वारा संबोधन

कार्यक्रम के संयोजक प्रो. विजय कर्ण जी

सम्मानित युवा साहित्यकार :

काव्य विधा	**श्री विक्रम सिंह मादावत**	करीमनगर, तेलंगाना,
कथा–साहित्य विधा	**श्री उत्कर्ष नारायण**	दौसा, राजस्थान,
पत्रकारिता विधा	**सुश्री दुर्गा शर्मा**	लखनऊ (उ.प्र.),
बाल–साहित्य विधा	**श्री इं. ललित शौर्य**	पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड
संस्कृत	**डॉ. सुधाकर मिश्र**	कोलकाता
असमिया भाषा	**श्री रूपम शइकिया शास्त्री**	जोरहाट, असम

सभी को पुरस्कार स्वरुप रुपये पच्चीस हजार (25,000) की धनराशि, अंगवस्त्र, व स्मृति चिन्ह तथा 'पं. प्रताप नारायण मिश्र द्वारा रचित साहित्य प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक प्रो. विजय कर्ण ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि बताते हुए कहा कि 40 वर्ष तक की आयु के युवा साहित्यकारों द्वारा अपनी रचनाओं से युवाओं में देशभक्ति, मातृ–पितृ भक्ति और भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान और श्रद्धा जगाई जाती है। न्यास द्वारा प्रतिवर्ष ऐसे छः युवा साहित्यकारों को सम्मानित किया जाता है। इस अवसर पर डॉ. कर्ण ने हिन्दी तथा संस्कृत एवं क्षेत्रीय भाषाओं को एक दूसरे का पूरक बताया। सम्मानित होने वाले सभी साहित्यकारों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

मंगलमय नव वर्ष

नववर्ष में आप नित्य पुष्प की भाँति खिलें,
जीवन में सदा हँसते-मुस्कुराते रहें।
ईश्वर की छाया हो पग-पग पर आपके,
नित खुशियों के मधुर गीत गाते रहें।
जगत और प्रकृति का साथ मिले सर्वदा,
नित्य निष्काम कर्म की ज्योति जगाते रहें।
'अखिल' की बार-बार, ईश से यही पुकार,
आप सुख-शान्ति सरिता में नहाते रहें।।

अखिलेश निगम 'अखिल'
आई.पी.एस.

अतिथियों के साथ मंच पर उपस्थित सभी सम्मानित युवा साहित्यकार

प्रो. विजय कर्ण ने समारोह में आए अतिथियों का परिचय कराया। उनका स्वागत महामना शिक्षण संस्थान के संयोजक श्री रंजीव तिवारी ने किया। भाऊराव देवरस सेवा न्यास का परिचय फिल्म के माध्यम से कराया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ अनुज चौबे एवं साथियों द्वारा प्रस्तुत वैदिकमंगलाचरण से एवं सरस्वती वन्दना भावनृत्य सहित सुश्री वैभवी ने किया। न्यास के सह सचिव श्री जितेन्द्र अग्रवाल ने आये हुए अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। डॉ. शिखा भदौरिया द्वारा प्रस्तुत वंदेमातरम् से कार्यक्रम का समापन हुआ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी स्मृति कविता पाठ 2021-22

विश्व बन्धुत्व, सामंजस्य और अपने में भारत को जीना–अटल जी का व्यक्तित्व

मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि डॉ वाचस्पति मिश्र, अध्यक्ष प्रो. अनुराधा तिवारी, संयोजक प्रो. विजय कर्ण और पुरस्कृत प्रतिभागी

अटल बिहारी वाजपेयी जी सभी राजैनतिक दलों का सम्मान पाते थे। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' उनकी विचारधारा थी। संयुक्त राष्ट्र की महासभा में उन्होंने अपना भाषण पूर्णतया हिन्दी में दिया जो कि संस्कृत युक्त भी था। उनका अनुसरण करते हुए पहले सुषमा स्वराज और फिर मोदी जी ने भी संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपना भाषण हिन्दी में दिया। अटल जी का प्रमुख लक्ष्य 'सेवा ही परमो धर्म' था। उक्त बातें लखनऊ स्थित नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय अलीगंज, लखनऊ एवं भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतरत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की 98वीं जयंती के अवसर पर अटल जी द्वारा रचित कविताओं का सस्वर पाठ प्रतियोगिता को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ के अध्यक्ष, डॉ. वाचस्पति मिश्र जी ने कही। उन्होंने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएँ बच्चों के लिए जोश व प्रोत्साहन का कार्य करती हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. अनुराधा तिवारी जी ने कहा कि अटल जी दयालु एवं संवेदनशील व्यक्तित्व को धारण करने वाले सहृदय राजनेता थे। आज के दिन मदनमोहन मालवीय जी का भी जन्मदिवस है, जो कि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक थे।

पाठ प्रतियोगिता में सुश्री कशिश को प्रथम, सुश्री पिंकी को द्वितीय एवम् नैन्सी सोनी को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। पुरस्कार स्वरूप स्मृति चिह्न, प्रमाण पत्र व विभिन्न उपहार दिये गये। सात अन्य प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार व सभी भाग लेने वालों को प्रमाणपत्र दिया गया।

मुख्य अतिथि डॉ वाचस्पति मिश्र जी द्वारा प्रमाणपत्र वितरण

कार्यक्रम के संयोजक, प्रो. विजय कुमार कर्ण ने श्रद्धेय भाऊराव देवरस जी के बारे में बताते हुए कहा कि मनुष्य के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि वह पहले मनुष्य बने। भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा अपने संस्थापक अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृति द्वारा में उन्हें नमन करने के लिए प्रतिवर्ष उनके जन्मदिवस 25 दिसम्बर को यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। अटल जी से युवा पीढ़ी को जोड़ने के लिए उनके व्यक्तित्व एवं कृत्यों से परिचित कराने के उपक्रम के रूप में इस वर्ष अटल जी रचित कविताओं का सस्वर पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रो. कर्ण ने कहा कि वही समाज अपने संस्कारों को लम्बी अवधि तक बचा पाता है जो अपने पुरखों तथा महापुरुषों को स्मरण रखता है और उनके गुणों को अपने अन्दर समाहित करता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ रश्मि बिश्नोई जी ने अतिथियों का परिचय कराया। काव्य पाठ के निर्णायक की भूमिका में श्री ब्रजेश चंद्र (पूर्व निदेशक, उ.प्र. संस्कृत संस्थान, लखनऊ), महाविद्यालय की डॉ ज्योति (प्रवक्ता जन्तुविज्ञान) और डॉ मीनाक्षी शुक्ला (प्रवक्ता, हिंदी) रहे। कार्यक्रम में श्री ओमप्रकाश वर्मा, महामना शिक्षण संस्थान के संयोजक श्री रंजीव तिवारी एवम् महाविद्यालय की ओर से डॉ. भास्कर शर्मा, डॉ शिवानी श्रीवास्तव, डॉ. शालिनी श्रीवास्तव, डॉ विनीता लाल, डॉ सपना जायसवाल, डॉ. पारुल मिश्रा, डॉ श्वेता भारद्वाज, डॉ राहुल कुमार, डॉ सारिका आदि उपस्थित रहे।

माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश

ऋषिकेश में प्रस्तावित माधव सेवा विश्राम सदन

ऋषिकेश में एम्स के निकट प्रस्तावित माधव सेवा विश्राम सदन के लिए मैप को स्वीकृति के लिए सम्बंधित विभाग को भेज दिया गया है। स्वीकृति मिलते ही यहाँ पर निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जाएगा। 400 बिस्तरों की व्यवस्था वाले इस विश्राम सदन के बनने से मुख्य रूप से उत्तराखंड में पहाड़ों पर रहने वाले रोगियों को अत्यधिक लाभ होगा।

विश्राम सदन, झज्जर

गत 21 अक्टूबर को झज्जर स्थित एम्स में बने विश्राम सदन का उदघाटन देश के प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया था। इस नवनिर्मित विश्राम सदन का संचालन भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा उसी दिन से किया जा रहा है। 806 बिस्तरों की सुविधा वाले इस वातानुकूलित विश्राम सदन के प्रारम्भ होने से यहाँ दूर-दूर से आकर कैंसर का उपचार कराने वाले रोगियों और उनके सहयोगियों को बहुत राहत मिली है। इस रोग का उपचार भी अधिक समय तक चलता है और आस पास कोई अन्य सुविधा न होने के कारण उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ता था। अब उन्हें बहुत सुविधा हो गई है। बहुत कम शुल्क में भोजन की भी सुविधा होने से उनको बहुत आराम लगता है। समय समय पर एम्स के चिकित्सक और अन्य वरिष्ठ कर्मचारी यहाँ आकर निरीक्षण करते रहते हैं। गत 23 दिसम्बर को एम्स झज्जर के इंचार्ज पद्मश्री डॉ ललित ने अपने सहयोगियों के साथ विश्राम सदन का निरीक्षण किया और वहां दी जा रही सुविधाओं की जानकारी ली।

मरीजों के लिए सुविधा - देश के सबसे बड़े कैंसर संस्थान बाढ़सा एम्स में विश्राम सदन शुरू, अस्पताल में आने वाले मरीजों को मिलेगा लाभ

कैंसर मरीजों को विश्राम सदन में मिलेगा ₹35 में खाना, ₹15 में नाश्ता

विश्राम सदन की व्यवस्थाओं का लिया जायजा

सस्ती मेडिसिन इजाद करने पर डॉ. ललित को मिला था पद्मश्री

झज्जर हरियाणा स्थित विश्राम सदन के विषय में समाचार पत्र में लेख

दिल्ली विश्राम सदन - योग कक्षा

दिल्ली में एम्स के निकट स्थित विश्राम सदन में आने वाले रोगियों और उनके सहायकों के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए यहाँ नियमित योग कक्षा का आयोजन होता है। इसके अतिरिक्त उनके मनोरंजन के लिए टी.वी. तथा कुछ खेलों की व्यवस्था भी न्यास द्वारा की गई है। पुस्तकालय में विभिन्न पुस्तकों का लाभ भी यहाँ रहने वालों द्वारा उठाया जाता है। कभी कभी भगवदगीता या अन्य धार्मिक पुस्तकों का वितरण भी किसी दानदाता के सहयोग से किया जाता है। समय समय पर विशेष रूप से किसी पर्व के अवसर पर भजन कीर्तन का आयोजन भी होता रहता है जिसमें सभी लोग बड़े आनंद के साथ भाग लेते हैं।

दिल्ली में एम्स के निकट स्थित विश्राम सदन में आने वाले रोगियों और उनके सहायकों के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए योग कक्षा

पावन स्मृति - जनवरी

पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा की और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया,अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं ऐसे उन सभी दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित हैं

दिनांक	दिवस	महापुरूष/घटना का नाम
1 जनवरी	जन्म-दिवस	साहित्यप्रेमी राजनेता : डॉ. संपूर्णानंद
7 जनवरी	जन्म-दिवस	कलाकारों के कलाकार : योगेन्द्र बाबा
7 जनवरी	पुण्य-तिथि	सादगी की प्रतिमूर्ति : श्री लक्ष्मण श्री कृष्ण भिड़े
8 जनवरी	पुण्य-तिथि	भारत सेवाश्रम संघ के संस्थापक: स्वामी प्रणवानन्द
11 जनवरी	बलिदान-दिवस	देशभक्त सरदार सेवासिंह
12 जनवरी	जन्म-दिवस	विश्वविजेता: स्वामी विवेकानन्द
14 जनवरी	जन्म-दिवस	साहित्य शिरोमणि: विद्यानिवास मिश्र
16 जनवरी	पुण्य-तिथि	राष्ट्रीय चेतना के अमर गायक: रामनरेश त्रिपाठी
17 जनवरी	जन्म-दिवस	रामसिंह कूका और उनके गोभक्त शिष्य
18 जनवरी	जन्म-दिवस	अनुशासन प्रिय: महादेव गोविन्द रानाडे
20 जनवरी	बलिदान-दिवस	छत्तीसगढ़ के अमर बलिदानी: गेंदसिंह
22 जनवरी	जन्म-दिवस	क्रान्तिकारी नृत्यांगना: अजीजन बाई
23 जनवरी	जन्म-दिवस	नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
26 जनवरी	जन्म-दिवस	स्वतन्त्रता सेनानी: रानी माँ गाइडिन्ल्यू
27 जनवरी	जन्म-दिवस	वनों का रक्षक: निर्मल मुण्डा
29 जनवरी	जन्म-दिवस	रज्जू भैया

डॉ. सम्पूर्णानन्द

डॉ संपूर्णानन्द का जन्म वाराणसी में 1 जनवरी सन् 1890 को एक कायस्थ परिवार में हुआ। आपने बी.एससी. के पश्चात एल.टी. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद विभिन्न स्थानों पर शिक्षण और पत्रकारिता से जुड़े अनेक कार्यों को आपने बड़ी योग्यता के साथ संपन्न किया।

श्री संपूर्णानंद में शुरू से ही राष्ट्रसेवा की लगन थी और वे महात्मा गांधी द्वारा संचालित स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा लेने को आतुर रहते थे। वे भारतीय संस्कृति एवं भारतीयता के अनन्य समर्थक थे। योग और दर्शन उनके प्रिय विषय थे। राजनीति में वे समाजवाद के अनुयायी थे किंतु उनका समाजवाद उसके विदेशी प्रतिरूप से भिन्न भारत की परिस्थितियों एवं भारतीय विचारपरंपरा के अनुरूप था। आपने 1954 से 1960 तक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया। 1962 में आपको ललित कला अकादमी उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार दिया गया। आप 1962 से 1967 तक राजस्थान के राज्यपाल भी रहे।

हिंदी तथा संस्कृत से उन्हें विशेष प्रेम था पर वे अंग्रेजी के अतिरिक्त उर्दू, फारसी के भी अच्छे ज्ञाता तथा भौतिकी, ज्योतिष और दर्शन शास्त्र के भी पंडित थे। आपको देश के अनेक विश्वविद्यालयों ने "डॉक्टर" की सम्मानित उपाधि से विभूषित किया था। हिंदी साहित्य सम्मेलन की सर्वोच्च उपाधि "साहित्यवाचस्पति" भी आपको मिली थी तथा हिंदी साहित्य का सर्वोच्च पुरस्कार "मंगलाप्रसाद पुरस्कार" भी आप प्राप्त कर चुके थे। आपका निधन 10 जनवरी 1969 को वाराणसी में हुआ।

स्वामी विवेकानन्द

(जन्म: 12 जनवरी 1863 - मृत्यु: 4 जुलाई 1902)

स्वामी विवेकानंद वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में स्वामी विवेकानन्द की वक्तृता के कारण ही पहुँचा। उन्हें 2 मिनट का समय दिया गया था। उन्हें प्रमुख रूप से उनके भाषण की शुरुआत "मेरे अमेरिकी बहनों एवं भाइयों" के साथ करने के लिये जाना जाता है। उनके संबोधन के इस प्रथम वाक्य ने सबका दिल जीत लिया था। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी जो आज भी अपना काम कर रहा है। वे रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य शिष्य थे।

कलकत्ता के एक कुलीन बंगाली कायस्थ परिवार में जन्मे विवेकानन्द आध्यात्मिकता की ओर झुके हुए थे। वे अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे जिनसे उन्होंने सीखा कि सारे जीवो में स्वयं परमात्मा का ही अस्तित्व हैं। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद विवेकानन्द ने बड़े पैमाने पर भारतीय उपमहाद्वीप का दौरा किया और ब्रिटिश भारत में मौजूदा स्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान हासिल किया। भारत में विवेकानन्द को एक देशभक्त सन्यासी के रूप में माना जाता है और उनके जन्मदिन को **राष्ट्रीय युवा दिवस** के रूप में मनाया जाता है।

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

(जन्म: 23 जनवरी 1897)

नेताजी भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी तथा सबसे बड़े नेता थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेज़ों के खिलाफ लड़ने के लिये उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिन्द फौज का गठन किया था। उनके द्वारा दिया गया **जय हिंद** का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। **"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा"** का नारा भी उनका था जो उस समय अत्यधिक प्रचलन में आया। भारतवासी उन्हें नेता जी के नाम से सम्बोधित करते हैं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जब नेता जी ने जापान और जर्मनी से सहायता लेने का प्रयास किया था, तो ब्रिटिश सरकार ने अपने गुप्तचरों को 1941 में उन्हें खत्म करने का आदेश दिया था।

नेता जी ने 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने 'सुप्रीम कमाण्डर' के रूप में सेना को सम्बोधित करते हुए **"दिल्ली चलो!"** का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश व कामनवेल्थ सेना से बर्मा सहित इंफाल और कोहिमा में एक साथ जमकर मोर्चा लिया। 21 अक्टूबर 1943 को सुभाष बोस ने आज़ाद हिंद फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार बनायी जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली, मान्चुको और आयरलैंड सहित 11 देशो की सरकारों ने मान्यता दी थी। जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिये। सुभाष उन द्वीपों में गये और उनका नया नामकरण किया। 1944 को आज़ाद हिंद फौज ने अंग्रेजों पर दोबारा आक्रमण किया और कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त भी करा लिया। कोहिमा का युद्ध 4 अप्रैल 1944 से 22 जून 1944 तक लड़ा गया एक भयंकर युद्ध था। इस युद्ध में जापानी सेना को पीछे हटना पड़ा था और यही एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ।

आज़ाद हिन्द सरकार के 75 वर्ष पूर्ण होने पर इतिहास में पहली बार वर्ष 2018 में भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने लाल किले पर तिरंगा फहराया। 2022 में दिल्ली के इंडिया गेट पर नेताजी की मूर्ति का अनावरण प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा किया गया। नेताजी भारतीयों के मन में हमंशा जीवित रहेंगे और प्रेरणा देंगे।

विभिन्न विश्राम सदनों में दिसम्बर - 2021 की उपस्थिति

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	KGMU, लखनऊ	विश्राम सदन, दिल्ली	IGIMS, पटना	एम्स, झज्जर
1	जम्मू कश्मीर			1		1
2	हिमाचल प्रदेश					2
3	पंजाब		4			7
4	हरियाणा		2	13	2	166
5	दिल्ली	7	11	3	10	71
6	उत्तराखंड	5	3	10		9
7	उत्तर प्रदेश	1618	746	103	8	162
8	बिहार	552	40	138	1478	34
9	झारखण्ड	66	4	21	35	
10	सिक्किम					1
11	नागालैंड					
12	असम					1
13	मणिपुर /मिजोरम			12		
14	अरुणाचल प्रदेश					
15	त्रिपुरा					
16	मेघालय					
17	प. बंगाल	13	8	2		6
18	ओडिशा/अंदमान	1		3		
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना				4	
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी					
21	कर्नाटक					1
22	केरल			3		
23	महाराष्ट्र /गोवा	4	8		4	
24	मध्य प्रदेश	46	2	37		21
25	छतीसगढ़	6		6		
26	गुजरात			2		
27	राजस्थान			15	1	17
28	अन्य					
	पड़ोसी देश					
29	नेपाल	11		4	8	
30	बांग्लादेश					
31	अन्य देश					
	योग (इस मास)	**2329**	**828**	**371**	**1550**	**498**
	योग (अप्रैल-दिसम्बरः 2021)	**18218**	**4253**	**3219**	**8419**	**1000**
	एक दिन की औसत उपस्थिति	**370**		**221**	**166**	

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केन्द्र	दिसम्बर	योग अप्रैल - दिसम्बर 2021
(सेवा समर्पण संस्थान - बिन्दौवा)	230	973
(51 शक्तिपीठ, बक्शी का तालाब)	58	134
अम्बेडकर नगर	32	188
माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केन्द्र, निराला नगर		
एलोपेथिक	465	2172
होम्योपैथिक	326	2026
रूग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम - होम्योपैथ	185	1884
कुल लाभान्वित रोगी	**1286**	**7377**

देवड़े नेत्र चिकित्सालय

चिकित्सालय में दी गई सेवाएँ

	दिसम्बर	योग अप्रैल - दिसम्बर 2021
नेत्र परीक्षण	561	3016
चश्मा वितरण	383	1970
मोतियाबिंद ऑपरेशन	39	44
पैथोलॉजी	8	124

आलोक : नेत्र एवं पैथोलॉजी जांच केवल 20 रूपए के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है।

आप भी लिखें :- सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख (चित्र सहित), सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा संस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं सुझाव आदि सामग्री तथा सेवा संवाद के प्रकाशित अंकों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर हमारा मार्गदर्शन, सहयोग करने का कष्ट करें- सम्पादक।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प

प्रकल्प का नाम	सम्पर्क सूत्र	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ.पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	श्रीमती अर्चना दीक्षित	9821483861
सामाजिक विज्ञान एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
विश्राम सदन, के.जी.एम.यू., लखनऊ	श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल	9415003111
देवड़े नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
सेवा संवाद (मासिक), लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक), लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
विश्राम सदन, एम्स, दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	श्री गौरव गर्ग	9918532007
विश्राम सदन, आई.जी.आई.एम.एस., पटना	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457
विश्राम सदन, एम्स, झज्जर (हरियाणा)	श्री विकास कपूर	9818098600